'पांव तले की दूब' उपन्यास में चित्रित आदिवासी समस्याएँ

प्रा. हणमंत परगोंडा कांबले
यशवंतराव चव्हाण वारणा महाविद्यालय,
वारणानगर
मो. नं. 9579728080
ईमेल- kamblehp4@gmail.com

सार:-

भारतीय समाज में अनेक धर्म विशेष, जाति विशेष के लोग एकत्रित रहते हैं। अनेकता में एकता भारत का वैशिष्ट्य है। अनेक जाति धर्मों के लोग रहते हुए भी भारत हमेशा एकजुट रहा है। इन सभी जाति धर्म की अपनी अलग पहचान, अपनी अलग संस्कृति, अपने अलग रीति-रिवाज है। सारे जाति समुदाय अपनी संस्कृति, रीति-रिवाज को महत्वपूर्ण मानते हुए, उन्हें अखंडित रखना चाहते हैं और यह अधिकार हमें संविधान ने भी दिया है। इन सभी समाजों में एक आदिवासी समाज भी है, जो अपनी संस्कृति, अपनी रीति-रिवाज, अपनी परंपरा को अखंडित रखना चाहता है। आदिवासी शब्द का अर्थ ही है 'आदि से वास करने वाले'। यह लोग जंगल में रहते हैं। आदिवासी समाज अपनी संस्कृति का विशेष ध्यान रखते है। इस उपन्यास में आदिवासी समाज के संस्कृति, परंपरा, उनकी समस्याएँ आदि का विस्तृत विवेचन किया हैं।

बीज शब्द:- आदिवासी, उपन्यास, फैक्ट्री, बेरोजगारी, शिक्षा।

प्रस्तावना:-

मूलतः आदिवासी समाज आत्मनिर्भर हैं। आधुनिक युग में सभी लोग अपने रहन-सहन को बदलने लगे हैं, लेकिन आदिवासी समाज अपनी संस्कृति, रहन-सहन का पूरी तरह से पालन कर रहा है। आदिवासी लोग पेड़, पर्वत, पत्थरों को अपना देवता मानते हैं और उनकी पूजा करते हैं। आधुनिक युग के सभ्य समाज के संपर्क में आने के बाद भी ज्यादातर आदिवासी जनजातियां अपने मौलिक जीवन-यापन का ही प्रतिनिधित्व करते है।

आदिवासी समाज भारत का प्राचीनम समाज हैं। 'पाँव तले की दूब' उपन्यास भी आदिवासी समुदाय की समस्याओं को लेकर लिखा हैं। संजीव अपने उपन्यासों में आदिवासी जनजीवन को बारीकी से प्रस्तुत किया है, और यह प्रस्तुतीकरण इस उपन्यास में भी मिलता हैं। हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श पर उपन्यास लिखने की शुरुआत कई दशक पहले से हुई। आज यह विमर्श प्रौढ़ अवस्था मैं हैं। सजीव आदिवासी विमर्श लिखने वाले प्रमुख उपन्यासकारों में से एक है। संजीव ने इस उपन्यास को आत्मकथनात्मक शैली में लिखा है। इसका नायक सुदीप्त उर्फ सुदामा प्रसाद है।

आदिवासी समाज देश के हर क्षेत्र में हमें मिलते हैं। परंपरागत समाज व्यवस्था और गांव में इनके लिए कोई स्थान नहीं होता। इसलिए वह जंगलों में ही अपना घर बनाते हैं। वे वन औषधियां बेचकर अपना उधर निर्वाह करते हैं। आदिवासी समाज धरती को अपनी मां मानता है। इनमें से ज्यादातर लोग अनपढ़ ही होते हैं। इसी वजह से इन में कुछ कुरीतियां, अंधश्रद्धाएँ भी है जो उनके लिए घातक साबित होते हैं। सरकार आदिवासियों के विकास के लिए हर साल करोड़ों रुपए खर्च करती है, अनेक योजनाएं बनाती है। लेकिन भ्रष्टाचार जैसे कारणों की वजह से यह योजनाएं आदिवासी जनसमुदाय तक पहुंच नहीं पाती, अगर पहुंचती भी है तो बहुत कम मात्रा में। इसीलिए उन्हे अनेक समस्याओं का सामाना करना पड़ता हैं।

स्वास्थ्य की समस्या:

जैसे-जैसे भारत विकसित हो रहा है वैसे वैसे कारखानों की संख्या में बढ़ोतरी हो रही है। इन कारणों की वजह से हवा प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण इन जैसे प्रदर्शनों में बढ़ोतरी भी हो रही है और इसका सीधा परिणाम मनुष्य पर पड़ता है किससे मनुष्य का जीवन छोटा होता जा रहा है। संजीव ने इस उपन्यास में मनसा नाले का जिक्र किया है। इस नाले में फैक्ट्री का दूषित पानी छोड़ा जाता है और यही पानी आदिवासी समुदाय अपने रोजमर्रा की जिंदगी में इस्तेमाल करता है इसी वजह से उन लोगों में अनेक बीमारियां अपने पैर फैला रहे हैं। दूषित पानी की वजह से आदिवासी समुदाय के लोगों को लकवे की बीमारी हो गई है। "माझी हडाम के घर जाकर मैंने उसकी लकवा की मारी 18 साल की बेटी 'जानकी' को देखा हाथ, पांव, चेहरा सूख के मरीज जैसे पतले और डरावने।"[1] आदिवासी समुदाय की बीमारी के अनेक कारण है उसमें से एक और है प्लांट से निकली हुई काली छाई। यह छाई वहां के पेड़ और पत्थरों के ऊपर जम जाती है इससे पेड़ों में भी प्रदूषण आ जाता है और यह पेड़ और पत्ते आदिवासियों के पशु खाते हैं और उन पशुओं के सहारे वह मनुष्य में घुस जाते हैं। "पेड़ों पर पसंद में आए पत्ते तक काले हैं दो ही

महीने में ऐसे हो गए मैंने पूछा पलक झपकते ही उछल कर एक युवक ने जामुन का पत्ता तोड़ कर दिखाया इस पर बिजली कारखाने की छाई है साहब।"[2] इन सभी कारणों से उनका स्वास्थ्य बिगड़ जाता है।

स्वास्थ्य सुविधाओं की समस्या:

आदिवासी समुदाय जंगलों में रहता है। इसी वजह से उनके यहां यातायात के साधन बहुत कम होते हैं, क्योंकि जंगलों से शहर तक आने के लिए अच्छी सड़क नहीं होती। इसी कारण से वे लोग कई कई सुविधाएं उन्हें मिल नहीं पाती, और कभी मिल पाती है अभी तो उनकी आदिवासी होने के कारण उन्हें नीचा दिखाया जाता है, और वहां से बिना इलाज के भगा दिया जाता है। सुदीप्त ने जब हड़ाम से पूछा कि तुम अस्पताल क्यों नहीं ले जाते तो इसके जवाब में हड़ाम कहता है "वहां कौन सुनता? ले गए थे। डांट के भगा दिया डागडर। तब से झड़ाई - फुंकाई होता है।"[3]

शासन या ठेकेदारों की समस्या:

आदिवासियों के ज्यादातर जमीनों पर सरकार का या उस जगह पर स्थापित कंपनी वालों का या ठेकेदारों का कब्जा होता है। उन लोगों को अपने ही घर जमीन से दूर करने का काम यह ठेकेदार लोग करते हैं। उन्हें जंगल से दूर रहने की सलाह दी जाती है अगर वह गलती से भी लकड़ी काटने या फिर अन्य किसी काम से जंगल में जाते हैं तो उन्हें पकड़ कर उनके ऊपर अत्याचार किया जाता है। सारे बातों से आदिवासी ठेकेदारों से नाराज है और उनसे नफरत करते हैं। "साहब, सरकार तो बहुत मेहरबान है ना हम पर?.... ये ई मेहरबानी है ना कि यह छोटा बुरु के जंगल शालवनी से हमारा बाप - दादा काठ काट के लाता रहा, अब हमारा लड़का - जनाना दातुअन भी नहीं तोड़ने सकता?"[4] इस पर जब सुदीप्त कालीचरण को समझाने के लिए कहता है कि "जंगल बचे रहे, इसमें हम सब का फायदा है न! मैं उसकी जलन पर मरहम लगाने की गरज से बोला, ये सख्ती शायद उसी के लिए की गई होगी।"[5] इस पर कालीचरण कहता है "हां बचाने के लिए...और ठेकेदार, अपीसर टरक- का - टरक जंगल काट के ले जाता, सो...? हियां प्रीतम सिंह का गोला में का है जा कर देखिए।"[6] ठेकेदार अफसर के साथ मिलकर उन्हें पैसा खिलाकर जंगल के वनों को तोड़कर अपने फायदे के लिए ले जाते हैं। लेकिन जंगल की रक्षा के लिए आदिवासी अगर सामने आए तो उन्हें घी में पड़े मक्खी की तरह उठाकर बाहर फेंक दिया जाता है।

अंधविश्वास की समस्या:

आदिवासी लोगों को शिक्षा नहीं मिल पाती इसी वजह से वह लोग अनपढ़ होते हैं और इसी अज्ञानता के कारण अंधविश्वास उन्हें अपने में समेट लेता है और इसी अंधविश्वास के कारण कभी-कभी उनके जान पर भी आती है लेकिन वह इस अंधविश्वास से दूर नहीं जाते इसका सबसे महत्वपूर्ण कारण है उन्हें शिक्षा ना मिलना। अगर कोई सुशिक्षित व्यक्ति उन्हें समझाने की कोशिश करें की अंधविश्वास बुरी बात है और इससे तुम दूर रहो तो वे लोग सुनते नहीं अंधविश्वास उनके दिलों दिमाग पर हावी है। सुदीप्त इसी बात को कालीचरण को समझाने के लिए कहते हैं "सोचो, अगर इस तंत्र मंत्र में इतनी ही ताकत होती तो तुम्हारे गुरु अब तक जेल में क्यों सड़ रहे होते।"[7] कभी कबार इस अंधविश्वास के कारण लोग किसी की जान लेने के लिए भी आगे पीछे नहीं देखते। सुदीप्त कहता है, "एक मनहूस खबर मिली की मोझीया वालों ने अपने ही गांव की एक बांझ औरत को डायन करार देकर पीट-पीटकर बेरहमी से मार डाला था।"

नशे की समस्या:

चाहे सभ्य समाज हो या आदिवासी समाज दोनों समाजों में नशा करने की समस्या हमें मिलती है। इस नशे से ना सभ्य समाज बच पाया ना ही आदिवासी समाज बच पाया। आदिवासी समाज में नशा करना इतना बुरा नहीं माना जाता जितना सभ्य समाज में माना जाता है। नशे के दुष्परिणाम को वे अशिक्षा के कारण समझ नहीं पाते उपन्यास में भी नशे की समस्या को उठाया गया है आदिवासी युवक कालीचरण वह दारू पीकर दफ्तर में आता है और सुदीप्त उसे हर बार समझाने का प्रयास करता है लेकिन कालीचरण जो है वह एक कान से सुनता है और दूसरे कान से छोड़ देता है फिर भी सुदीप चुप नहीं बैठ जाओ बाहर और उसे समझाता ही रहता है। वह कहते हैं "किस्कू तुमने दारू अभी तक नहीं छोड़ी...? क्यों मुझे और खुद को जलील करने पर तुले हुए हो ...? या देखो किसको तुम जिस समाज से आए हो वह सदियों से अपेक्षित रहा है।"[9]

बेरोजगारी की समस्या:

ज्यादातर आदिवासी समाज अनपढ़ था। लेकिन इस समाज में कुछ ऐसे व्यक्ति भी थे जिन्होंने थोड़ी बहुत पढ़ाई की थी और इसी वजह से वे चाहते थे कि नौकरी करें। सरकार ने भी आदिवासी लोगों के लिए आरक्षण घोषित किया है, लेकिन असल में इन आरक्षित जगहों पर दूसरे लोग जो इस आरक्षण के लिए पात्र नहीं हैं वे आकर बैठ जाते हैं। इसके कारण जिन स्थानों पर आदिवासी युवक को रोजगार मिलना चाहिए वह उसे नहीं मिलता और वहां बेरोजगार होता है। इस उपन्यास में संजीव ने इस समस्या को लोगों के सामने रखा है। पंडित अपने भाई के बेटे के लिए जब सुदीप के पास नौकरी मांगने जाता है तब सुदीप्त उसे कहता है, कि वह आरक्षित जगह है तब पंडित कहता है ‘‘बहुत देखा कानून साहेब! पंडित की गर्दन स्प्रिंग सी तन गई, सब बार पाक गया देखते - देखते। ‘कैंडीडेट नहीं मिला’ कहकर कितनी बहालिया हुई बताए…? ई कहिए की तकदीर खराब थी कि यही रह गए वरना दिखाते कैसे नहीं होता है।’’[10] इससे यह बात साबित होती है कि आरक्षित जगहों पर दूसरे आदमी को बिठाना आम बात हो गई है और इसी वजह से आदिवासी समाज रोजगार से वंचित रह गया है।

निष्कर्ष:

आदिवासी समाज की समस्याओं को अगर हमें जड़ से मिटाना है, तो सरकार की योजनाओं को उन तक पहुंचाना यह जिम्मेदारी हर एक व्यक्ति की रहेंगी। आदिवासी समाज के लोगों में जनजागृति कर अंधविश्वास और विज्ञान इन दोनों के बीच का अंतर उन्हें समझा कर, उन्हे शिक्षा के लिए प्रेरित करना चाहिए। साहित्यकारों का सबसे महत्वपूर्ण काम यह है कि वह अपनी रचनाओं में आदिवासियों के दुख, दर्द, समस्याएं लिखकर सभ्य समाज में उनके प्रति मानवता की भावना निर्माण करें। आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा की व्यवस्था कर उन्हें सुशिक्षित करें तो वह इन सारी बातों से आगे बढ़कर खुद का विकास खुद ही कर सकते है।

संदर्भ ग्रंथ

1) ‘पाँव तले की दूब’, संजीव वाग्देवी प्रकाशन बीकानेर पृष्ट क्र. 66
2) ‘पाँव तले की दूब’, संजीव वाग्देवी प्रकाशन बीकानेर पृष्ट क्र. 68
3) ‘पाँव तले की दूब’, संजीव वाग्देवी प्रकाशन बीकानेर पृष्ट क्र. 66
4) ‘पाँव तले की दूब’, संजीव वाग्देवी प्रकाशन बीकानेर पृष्ट क्र. 32
5) ‘पाँव तले की दूब’, संजीव वाग्देवी प्रकाशन बीकानेर पृष्ट क्र. 32
6) ‘पाँव तले की दूब’, संजीव वाग्देवी प्रकाशन बीकानेर पृष्ट क्र. 32
7) ‘पाँव तले की दूब’, संजीव वाग्देवी प्रकाशन बीकानेर पृष्ट क्र. 33
8) ‘पाँव तले की दूब’, संजीव वाग्देवी प्रकाशन बीकानेर पृष्ट क्र. 25
9) ‘पाँव तले की दूब’, संजीव वाग्देवी प्रकाशन बीकानेर पृष्ट क्र. 31
10) ‘पाँव तले की दूब’, संजीव वाग्देवी प्रकाशन बीकानेर पृष्ट क्र. 23